INTERNATIONAL JOURNAL OF HISTORY

E-ISSN: 2706-9117
P-ISSN: 2706-9109
IJH 2020; 2(1): 50-52
Received: 15-11-2019
Accepted: 26-12-2019

डॉ. प्रेम कुमार निषाद
+2 शिक्षक (इतिहास), राज हाई स्कूल, दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
डॉ. प्रेम कुमार निषाद
+2 शिक्षक (इतिहास), राज हाई स्कूल, दरभंगा, बिहार, भारत

भारतीय राजनीति में गठबंध का उद्भव एवं विकासः एक ऐतिहासिक अध्ययन

डॉ. प्रेम कुमार निषाद

सारांश
भारत विश्व का सबसे बडा लोकतांत्रिक देश है। यहाँ प्रत्येक पाँच वर्ष की अवधि के बाद लोकसभा और विधानसभा चुनाव होते हैं। इन चुनावों के माध्यम से जनता अपने प्रतिनिधि को चुनती है, जो केन्द्र और राज्य स्तर पर सरकार का गठन करते हैं, भारतीय लोकतंत्र में बहुदलीय व्यवस्था का प्रावधान है, इसलिए कई बार किसी एक दल को स्पष्ट बहुमत नहीं मिल पाता। इससे राजनीति अस्थिरता की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। अतः उक्त परिस्थितियों में गठबंधन सरकार की स्थापना की जाती है।

प्रस्तावना
भारतीय राजनीतिक प्रणाली में गठबंधन की राजनीतिक मंच पर लगभग एक ही पार्टी का वर्चस्व था। कांग्रेस पार्टी ने लगभग 1969 तक भारतीय राजनीतिक मंच पर अपना एकाधिकार स्थिर रखा। कई राजनीतिक विज्ञान के विशेषज्ञ इस व्यवस्था को "कांग्रेस व्यवस्था (ब्वदहतमे ैलेजमउ)" का नाम देती है। कांग्रेस विरोधी पार्टियों ने यह अनुभव किया कि उनकी सत्ता बँट जाने के कारण ही कांग्रेस सत्तासीन है। 1967 के चौथे आम चुनाव (लोकसभा और विधानसभा) में कांग्रेस पहली बार नेहरु के बिना मतदाताओं का सामना कर रही थी। इंदिरा गाँधी मंत्रिमंडल के आधे मंत्री चुनाव हार गये। यही वह समय रहा जब गठबंधन की परिघटना भारतीय राजनीति में प्रकट हुई।
गठबंधन उस प्रक्रिया को कहा जाता है, जब दो या दो से अधिक व्यक्ति अथवा दल किसी विशेष उद्देश्य की पुष्टि हेतू अस्थायी रूप से अल्पकाल के लिए जुडते हैं। राजनीति के संदर्भ में गठबंधन का आश्य दो या दो से अधिक दलों का मेल है। ''ए डिक्श्नरी ऑफ पॉलिटिक्स थॉट'' रोजर स्र्कटन के अनुसार राजनीति के सम्बंध में गठबंधन को परिभाषित करते हुए लिखा है : विभिन्न दलों या राजनीति पहचान रखने वाले प्रमुख व्यक्तियों का आपसी समझौता गठबंधन कहलाता है।
गठबंधन सरकार की विशेषताएँ यह होती है कि इसमें किसी एक पार्टी का वर्चस्च नहीं होता। वह समान विचारधारा, उद्देश्य, नीति, कार्यक्रम आदि रखने वाली पार्टियों का समूह होता है। गठबंधन सरकार की सफलता अथवा असफलता उन सभी पार्टियों के पारस्परिक सहयोग एवं विचारधारा पर निर्भर करती है। साधारण गठबंधन सरकार की आवश्यकता तब अनुभव होती है, जब किसी भी एक राजनीति दल को स्पष्ट तथा अनिवार्य जनादेश नहीं मिलता। गठबंधन सरकार की संकल्पना विश्व स्तर पर व्यापक रूप से दिखाई पडती है। आज ब्रिटेन, जर्मनी, आस्ट्रेलिया, बेल्जियम, कनाडा, डेनमार्क, फिनलैंड, इण्डोनेशिया, आयरलैंड, इजराइल, जापान आदि सहित कई दशों में गठबंधन सरकार साझा कार्यक्रम बनाती है। और उसका सामुहिक उत्तरदायित्व होता है। इस सरकार द्वारा लिए गए निर्णय उसके विभिन्न घटक राजनीतिक दलों के निर्णय माने जाते हैं, इसलिए कोई भी कार्य करने से पूर्व या कोई भी नीति निर्धारित करने से पूर्व सभी राजनीतिक दल विचार–विमर्श करते हैं। इससे देश की जनता के हित में अधिकिारिक निर्णय लिए जाते हैं।

गठबंधन की राजनीति की देन
भारत में गठबंधन की राजनीति की शुरुआत एक क्रमिक विकास की प्रक्रिया रही। इसकी शुरुआत देश के आजाद होने से लेकर विकास की सीढ़ियों तक चढ़ने के इतिहास में देखा जा सकता है। साथ ही धीरे–धेरे आम जनता व लोगों में जागरूकता से भारतीय राजनीतिक परिस्थतियों ने अपनी दशा और दिशा तय की। आज वर्तमान में न सिर्फ चुनाव प्रक्रिया अधिक कुशल तरीके से संचालित की जाती है बल्कि प्रत्येक मतदाता अपने मत मूल्य, उससे जुड़ी उसका भविष्य और परिणामों से बेहतर रूप में अवगत दिखता है। कहीं न कहीं ये गठबंधन की राजनीति की ही देन है जिसमें कई मुद्दे व चेतनाओं को लोगों के समक्ष रखा। मोटे तौर पर गठबंधन की राजनीति ने भारतीय राजनीति में महत्त्वपूर्ण सकारत्मक सुधार लाये हैं जैसे'

लोकतंत्र को मजबूती– लोग लिंग, जाति, वर्ग और क्षेत्र सन्दर्भ में न्याय तथा लोकतंत्र के मुद्दे उठा रहे हैं।

सहमति की राजनीति– गठबंधन राजनीति ने सहमति की राजनीति को जन्म दिया. यह सहमति कई महत्त्वपूर्ण मुद्दों पर देश के वर्तमान विकास के लिए लाभकारी रही. इन मुद्दों में आर्थिक नीतियों के प्रति समन्वय व तालमेल सबसे महत्त्वपूर्ण रहा. कई दल संयुक्त रूप से इस बात को मानते हैं कि नई आर्थिक नीतियाँ देश में पहले की अपेक्षा आज विकास को लाने का मुख्य कारण रही है.

सामाजिक खाई को पाटने में महत्त्वपूर्ण भूमिका– गठबंधन की राजनीति के माध्यम से जहाँ कई क्षेत्रीय पार्टियाँ अस्तित्व में आयीं, वहीं कई राष्ट्रीय पार्टियों ने कालांतर से दबी सामाजिक समस्याओं की जड़ें खोदी। बसपा ने दलित उत्थान, अन्य पार्टियों ने पिछड़ी जातियों के राजनीतिक और सामाजिक दावे की बात छेड़ी. "आरक्षण" का मुद्दा जो इस पिछड़ेपन की समस्या के समाधान में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है, इसी समीकरण की देन है। कई पार्टियों ने महिला घरेलू हिंसा, बाल अधिकार, शिक्षा के अधिकार जैसे महत्त्वपूर्ण मुद्दों को भारतीय राजनीति का हिस्सा बनाया।

गठबंधन की राजनीति के फलस्वरूप महत्त्वपूर्ण मुद्दे पर जनता का ध्यानाकर्षण : गठबंधन युग के पहले एक दल के ही मुद्दे राष्ट्रीय मुद्दे पर हावी रहते थे। लेकिन गठबंधन के कारण अब कई महत्त्वपूर्ण मुद्दे राष्ट्र के समक्ष न मात्र लाये जाते हैं बल्कि उन पर वाद–विवाद की भी पहल की जाती है। भ्रष्टाचार को लेकर, अल्पसंख्यकों से जुड़े मुद्दे या कई परमाणु परियोजनाओं पर ऐसे विवाद होते रहे हैं।

देश के शासन में प्रांतीय दलों की बढ़ती भूमिका और उन्हें स्वीकृतिः वर्तमान सन्दर्भ में अब प्रांतीय और राष्ट्रीय दलों में भेद कम हो चुका है तथा कई महत्त्वपूर्ण मुद्दे इस कारण राष्ट्रीय मुद्दे बन कर उभरने लगे हैं।

गठबंधन की राजनीति ने भारत को अधिक संघात्मक बनाया : न सिर्फ क्षेत्रीय पार्टियों के उदय व उनकी प्रगति से ऐसे कार्य हुए हैं जिनसे भारतीय संघ मजबूत होता है बल्कि अब ऐसे विवाद कम ही देखे जाते हैं जहाँ केंद्र की सरकार राज्य की सरकारों पर अनुचित दबाव और गैर–संवैधानिक हस्तक्षेप करे। गठबंधन को साथ लेकर चलना, कार्यसिद्धि पर अधिक जोर कहीं–न–कहीं राजनीतिक दलों की सोच को परिपक्व बनाने का कार्य कर रहा है।

गठबंधन सरकार की कमजोरियाँ

कमजोर सरकारें तथा सथायित्व को खतराः भारत में गठबंधन सरकार (बवंसपजपवद हवअमतदउमदज) के अस्तित्व को लगातार सरकारों के परिवर्तन से एक नकारात्मक स्थिति की तरह लिया जाने लगा. अटलबिहारी वाजपेयी की 1996 में 13 दिन चली सरकार, उसके ठीक बाद 1996 जून से अप्रैल 1997 के बाद अल्पावधि तक चली देवगौड़ा की सरकार, फिर गुजराल की सरकार का आना और अल्पावधि में चले जाना और पुनः छक। की 13 महीने की सरकार ने गठबंधन की राजनीति की सबसे बड़ी दुर्बलता को दर्शाया। इस प्रकार की समीकरणों में "स्थायी अस्तित्व के संकट" की झलक दिखी।

नीतियों के बदलने पर दबाव की लगातार बाध्यता रू भारत में गठबंधन सरकार के समक्ष हमेशा से यह चुनौती रही कि किसी भी विषय पर एक आम सहमति कैसी बनाई जाए? कई विदेशी संधियाँ इस तरह की बाध्यता से अक्सर प्रभावित होते रहे. उदाहरण के तौर पर छक। के समय भारत–अमेरिका नागरिक परमाणु समझौता (ब्पअपस छनबसमंत क्मंस) "हाइड एक्ट (भ्लकम ।बज)" को लेकर तमाम चर्चाएँ कई स्तरों पर लोकसभा और राज्य सभा में झूलती रहीं। इस प्रकार की विकट परिस्थितियों ने न सिर्फ गठबंधन सरकार की मजबूरियों को स्पष्ट रूप से दिखाया बल्कि इससे भारतीय राजनीति की वर्तमान स्थिति पर कई प्रकार के विवादों, बहस और इनकी तार्किकता पर प्रश्नचिह्न लगाया।

अलग–अलग दलों में सैद्धांतिक आदर्शों में मतभेद रू गठबंधन सरकार के अस्तित्व को खतरा अक्सर इस सम्बन्ध में देखा जाता है कि कई दलों से मिलकर बनी सरकार को कई सिद्धांतों के मध्य एक समन्वय बनाना पड़ता है और असंतुलन की स्थिति से बचना पड़ता है। उदाहरण के लिए मार्क्स से सम्बंधित दलों की विचारधारा के कारण कई बार औद्योगिक निर्णयों को बदलना या पूर्णतः समाप्त करना पड़ा है। इस प्रकार के निर्णय न केवल घरलू मुद्दों के परिवर्तन पर लागू किये जाते हैं बल्कि कई स्थितियों में बाहरी देश और संघ जैसे अमेरिका, यूरोपियन यूनियन (पूँजीवाद के प्रतिनिधि) से सम्बंधित नीतियों पर भी लिए जाते हैं। अतः आदर्शों पर मतभेद गठबंधन राजनीति की महत्त्वपूर्ण चुनौती है।

प्रधानमन्त्री के विशेषाधिकार का हननः मंत्रिमंडल के लिए सहयोगियों का चयन ह्मसेशा प्रधानमन्त्री का विशेषाधिकार माना जाता है. परन्तु गठबंधन सरकार (बवंसपजपवद हवअमतदउमदज) में प्रधानमन्त्री का यह विशेषाधिकार बुरी तरह प्रभावित होता है क्योंकि क्षेत्रीय दलों के नेता यह तय करते हैं कि मंत्रिमंडल में उनके दल का नेतृत्व कौन–कौन करेंगे और यह भी कि उन्हें कौन–कौन विभाग दिए जायेंगे. कई नेता तो पहले से ही यह मंशा पाले रखते हैं कि उन्हें कौन–सा पद लेना है, चाहे कैसे भी। गठबंधन सरकार की मजबूरी के कारण प्रधानमन्त्री को उनकी बात माननी पड़ती है।

गठबंधन सरकार में महत्वपूर्ण पहलू

हमारे देश में जहाँ एक बडा वर्ग अशिक्षित है वहाँ गठबंधन सरकार कितनी प्रासंगिक हैं। गठबंधन सरकार के अच्छे और बुरे, दोनों ही पक्ष है। भारतीय इतिहास पर नजर डाली जाएँ, तो भारत में कई बार बहुमत प्राप्त दलों ने ही सत्ता संचालन किया है, लेकिन उनसे जनता को आशातित परिणाम नहीं मिले, इसलिए जनता ने विकल्पों की खोज की इस प्रक्रिया में किसी एक पार्टी द्वारा सरकार का गठन सम्भव नहीं हुआ। इससे सभी पार्टियों को भी यह समझ आ गया कि यदि वे जनता की आशाओं पर खरे नहीं उतरेंगे, उनकी उपेक्षा करेंगे, तो वह उसे दोबारा सत्ता में आने का अवसर ही नहीं देंगे। इस प्रकार, गठबंधन सरकारों ने सभी दलों पर राजनैतिक दबाव बनाया गया। गठबंधन सरकार किसी भी एक पार्टी की विचारधारा तथा कायशैली तानाशाही परिवर्तन नहीं हो पाती।

निष्कर्ष

भारत में गठबंधन सरकार के जितने सकारात्मक पक्ष हैं, उतने ही नकारात्मक पक्ष भी हैं सबसे बडी बात तो यह है कि इसकी सफलता पर संदेह बना रहता है और सरकार स्वतंत्र रूप से कोई भी निर्णय लेने से पहले कई बार सोचती है शायद भारतीय जनता भी इस ओर ध्यान केन्द्रित करने पर मजबूर हुई है। तभी तो उसने 16वीं लोकसभा के चुनावों में भारतीय जनता पार्टी को स्पष्ट जनादेश दिया है। आशा है कि यह सरकार जनता की उम्मीदों पर खरी उतरेगी, ताकि जनता को फिर से गठबंधन वाली सरकार पर विचार न करना पड़े और देश विकासशील से विकसित की ओर आगे बढ़े।

सन्दर्भ

1. अरिहन्त पब्लिकेशन्स इंडिया लिमिटेड –योगेशचंद जैन
2. कम्पीटिशन सक्सेस रिव्यू – 2000
3. इण्डिया टूडे
4. प्रतियोगिता दर्पण – 1999
5. इण्टरनेट
6. पेपर दैनिक भास्कर।